REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में लैंगिक भूमिका एवं आत्म–सम्मान की अवधारणा के ज्ञान का उपयोग

सुनीता भार्गव[1] , सन्दीप अरोरा[2]
[1]शोध निर्देशिका , प्राचार्य ,संजय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय जयपुर (राजस्थान) .
[2]शोधार्थी (शिक्षा) पी.एच.डी. , राजस्थान विश्वविद्यालय , जयपुर ।

शोध सारांश (Abstract)

लैगिंक भूमिका सामाजिक रूप से निर्मित वे व्यवहार, क्रियाकलाप या गतिविधियॉ है, जो समाज में पुरूष एवं महिला के लिये उचित समझी जाती है। मूलतः संस्कृति सापेक्ष होने के कारण लैंगिक भूमिका के अनेक जटिल एवं बहुआयामी निहितार्थ होते हैं। आत्म–सम्मान, आत्म मूल्य की एक भावना है। स्वयं के विषय में अपना धनात्मक या)णात्मक मूल्याकंन, जो हम महसूस करते हैं, वहीं आत्म–सम्मान है। लैंगिक भूमिका का अन्तर विद्यार्थियों के क्रियाकलापों, गतिविधियों एवं आत्म सम्मान को किस प्रकार एवं कितना प्रभावित करता है ? निरन्तर शोध का विषय रहा है। वस्तुतः शैक्षिक पटल पर लैंगिक भूमिका एवं आत्म–सम्मान की अवधारणाओं का ज्ञान एवं उनके शैक्षिक निहितार्थ अध्यापक, विद्यार्थी, शैक्षिक कार्यकर्ताओं एवं प्रशासकों के लिए बहुत उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है ।

शोध पत्र (Research Paper)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। भूख, प्यास, काम, क्रोध, सत्य, पलायन, निन्द्रा जैसे जन्मजात प्रेरकों को साथ लेकर एक बच्चा परिवार में जन्म लेता है लेकिन रूचि, प्रतिष्ठा आदि कुछ प्रेरकों को बच्चा अपने प्रयासों से अर्जित करता है। जन्म लेने के साथ ही जैविकीय एवं शारीरिक विशेषताओं के आधार पर बच्चे को बालक एवं बालिका में विभाजित किया जाता है। परिवार में एक बच्चे के साथ उसके लिंगानुसार अलग–अलग व्यवहार किया जाता है, क्योंकि परिवार में ही बच्चों को सर्वप्रथमअपने लिंग के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है। परिवार में समाजीकरण की प्रक्रिया के दौरान ही बच्चे में लैंगिक पहचान विकसित होती है। उसके लिंग के आधार पर ही उसका विकास किया जाता है और उसी प्रकार के खिलौने, कपडे आदि प्रदान किए जाते हैं। इस प्रकार से माता–पिता द्वारा बाल्य काल से ही यह अवधारणा बालक के ह्रदय में उत्पन्न कर दी जाती है कि अपने जीवन में उसकी किस प्रकार की भूमिका होगी। **विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार** – "लैंगिक भूमिका सामाजिक रूप से निर्मित वे भूमिका, व्यवहार व गतिविधियॉ है, जो समाज में पुरूष व महिला के लिए उचित समझी जाती है।" यदि देखा जाए तो लैगिंक भूमिका दृष्टिकोणों की प्रकट अभिव्यक्ति है, जिससे एक व्यक्ति के पुरूषत्व या स्त्रीत्व का बोध होता है। वास्तव में लैंगिक भूमिका सीखा हुआ व्यवहार है। लैगिंक भूमिका संस्कृति –सापेक्षी (Cultural Centered) होती है। लैंगिक भूमिकाएँ अपने सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक आयामों में बदलती रहती है। लैगिंक भूमिकाओं में एक निश्चित प्रकार की

सार्वभौमिकता पाई जाती है। किन्तु समाज निर्मित होने के कारण इनको बदलना सम्भव होता है। मूलतः संस्कृतिक सापेक्ष होने के कारण लैंगिक भूमिका के अनेक जटिल एवं बहुआयामी निहितार्थ होते है।

सामाजिक प्राणी होने के कारण मानव की मनोवैज्ञानिक आवश्यकता आत्म–सम्मान मनोविज्ञान की प्राचीन अवधारणाओं में से एक है। आत्म–सम्माान शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग **मिल्टन (1668 ई0)** ने किया। किन्तु मनोविज्ञान में आत्म–सम्मान शब्द का सर्वप्रथम व्यापक प्रयोग अमेरिकी मनोवैज्ञानिक एवं दार्शनिक **विलियम जेम्स** ने 1890 ई0 में किया। मानवतावादी मनोविज्ञान के जनक **अब्राहम मैसलो** ने अपने अभिप्रेरणा सि(ान्त में आवश्यकता पदानुक्रम में आत्म–सम्मान की आवश्यकता को ऊपर से दूसरे पायदान पर उच्च स्तरीय आवश्यकता के रूप में रखा है। आत्म सम्मान व्यक्तित्व की एक विशेषता या मांग है। आत्म सम्मान शिक्षा मनोविज्ञान में प्रयुक्त एक ऐसा सम्प्रत्यय है, जो एक व्यक्ति के एक व्यक्ति के अपने या अपने मूल्य के समग्र भावनात्मक मूल्याकंन को प्रतिबिम्बित करता है। **नैथानील ब्रैंडन** के शब्दों में – "हम अपने जीवन में जितने भी निर्णय लेते है, उनमें कोई भी इतना महत्वपूर्ण नहीं हैं, जितना यह कि हम अपने विषय में क्या निर्णय पारित करते है?" वस्तुतः आत्म–सम्मान का प्रयोग व्यक्ति की समस्त भावनाओं को दर्शाने के लिए किया जाता है। यह अपने आपके प्रति एक नजरिया व दृष्टिकोण को प्रदर्शित करता है। **मौरीस रोशनबर्ग** के अनुसार – "आत्म–सम्मान, आत्म मूल्य की एक भावना है।" आत्म सम्मान स्वयं की सहज स्वीकृति, स्वप्रेम और स्व सम्मान की व्यक्तिगत अनुभूति है, जो दूसरों की प्रशंसा, निन्दा, मूल्यांकन आदि से स्वतंत्र है। **स्मिथ और मैकी** आत्म–सम्मान के विषय में कहते है – "स्वयं के विषय में अपना धनात्मक या ऋणात्मक मूल्यांकन, जो हम महसूस करते है, वही आत्म–सम्मान है।" आत्म–सम्मान, स्व सम्मान और आत्म विश्वास का योग है। **नैथानील ब्रैंडन** अपनी पुस्तक **'द साइकलॉजी ऑफ सेल्फ स्टीम'** में लिखते है – "आत्म सम्मान से तात्पर्य व्यक्ति के उस मनोवैज्ञानिक सम्प्रत्यय और व्यक्तित्व लक्षण से है जो व्यक्ति की समग्र भावना या व्यक्तिगत मूल्य का वर्णन करने के लिए प्रयोग किया जाता है। व्यक्ति स्वयं के बारे में क्या सोचता है? दूसरे उसके बारे में क्या सोचते है? आत्म–सम्मान इसके विषय में स्वयं का सकारात्मक या नकारात्मक मूल्यांकन है। यह अपनी योग्यताओं के प्रति व्यक्ति का, स्वयं का मानसिक प्रत्यक्षीकरण है।"

रोचेस्टर विश्वविद्यालय के **एल0जे0 अलपर्ट मिल,** एवं **जे0पी0 कोनिल** ने लिंग एवं लैंगिक भूमिका का बच्चों के आत्म–सम्मान पर पडने वाले प्रभाव को जानने का प्रयास किया। यह प्रयोग मनोरोग, चिकित्सा एवं दन्त चिकित्सा के सन्दर्भ में किया गया। इसके बाद **अमाण्डा जे0 रॉस, रेमेण्ड मोन्ट मेयर, आर0एल0 हनलोन, जे0 डब्लू ब्रेनर, स्टीनसन, एम0पोलस, ए0 बाल्स** आदि शोधकर्ताओं ने विभिन्न चरों को लेकर इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण शोध कार्य किए। व्यवसाय, घर का काम, निर्णय लेना, बच्चों की देखभाल एवं शिक्षा लैंगिक भूमिका के क्षेत्र है, जिनके आधार पर कहा जा सकता है कि लैंगिक भूमिका एवं आत्म–सम्मान सम्बन्धित है। लैंगिक भूमिका एवं आत्म–सम्मान की अवधारणा का ज्ञान किस प्रकार शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में लाभदायक सिद्ध हो सकता है ? यह एक विचारणीय प्रश्न एवं शोध का विषय प्रारम्भ से ही रहा है। लैगिंक भूमिका एवं आत्म–सम्मान की आवधारणा के ज्ञान का शैक्षिक, परिप्रेक्ष्य में निम्नलिखित उपयोग है –

1) लैंगिक भूमिका एवं आत्म–सम्मान का ज्ञान विद्यार्थियों की अन्तः शक्तियों को समझने में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

2) विद्यार्थियों में लिंग भेद का ज्ञान किए बिना उनकी आवश्यकताओं, स्तर, क्षमताओं के अनुकूल शिक्षा प्रदान करने में लैंगिक भूमिका एवं आत्म–सम्मान का ज्ञान उपयोगी है।

3) यह विद्यालयों में बालक व बालिकाओं के विचारों को लैंगिक समानता के पक्ष में विकसित करने का वातावरण बनाने एवं शिक्षकों के द्वारा किसी भी प्रकार के भेदभाव को निषिद्ध करने में उपयोगी है।

4) यह लैंगिक भूमिका आधारित पूर्वाग्रहों को समाप्त कर अध्यापकों, विद्यार्थियों एवं शैक्षिक कार्यकर्ताओं में समता–मूलक एवं लोकतान्त्रिक मूल्यों का संचार करने में उपयोगी है।

5) यह विद्यार्थियों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के माध्यम से लैंगिक समानता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण एवं आत्म–सम्मान विकसित करने में उपयोगी है।

6) यह बालकों में सम्मान की आवश्यकताओं को जाग्रत कर उनके चरित्र का निर्माण करने एवं उन्हें उच्च व्यक्तित्व का व्यक्ति बनाने में उपयोगी है ।

7) यह शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में इस बात को सिखाने में उपयोगी है कि स्वयं के लिए सम्मान व प्रेम को अहमियत देना एक सिक्के के दो पहलू है। आपका आत्म सम्मान स्वयं की आत्म शान्ति के लिए आवश्यक है, किन्तु आत्म–सम्मान एवं अहंकार में सन्तुलन बनाकर रखे। विद्यार्थी व अध्यापक दोनों में स्वयं के लिए आत्म–सम्मान आवश्यक है। जब आप स्वयं से प्रेम करेगें, तभी आप दूसरों को प्रेम दे पायेगें ।

8) यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को समझकर उनके व्यक्तित्व को ग्रूम करने में उपयोगी है।

9) यह अध्यापक, विद्यार्थियों एवं शैक्षिक कार्यकर्ताओं में नकारात्मक विचारों के स्थान पर सकारात्मक विचारों का संचार करने में उपयोगी है, जिससे वे स्वयं के विषय में अच्छा सोचना सीख सके एवं अपने आत्म–सम्मान में वृद्धि कर सके ।

10) लैंगिक भूमिका के परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान को किस प्रकार ऊँचा उठाया जा सकता है। इस तथ्य को समझने में सहायक है, ताकि विद्यार्थियों के अभिप्रेरणात्मक व्यवहार को बढ़ाकर उन्हें स्वयंसेवी बनाया जा सके, जिससे वे उद्देश्यपूर्ण जीवन जी सके ।

11) यह व्यापक दृष्टि से लैंगिक भूमिका को समझने एवं व्यक्तिगत विभिन्नताओं के आधार पर विद्यार्थियों के मध्य कार्य विभाजन करने में उपयोगी है, जिससे वे आत्म निर्भर बन सके और आत्म निर्भरता के साथ उनमें आत्म–सम्मान की भावना का विकास हो सके ।

12) यह शिक्षण संस्थानों में लिंग आधारित भेदभावपूर्ण एवं अलगाववादी व्यवहार वर्जित करने में सहायक है ताकि लिंग आधारित दुर्व्यवहार एवं भेदभाव रहित वातावरण का निर्माण किया जा सके। जिससे लैंगिक भेदभाव के कारण अवसर वंचित विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान को निर्बल होने से बचाया जा सके ।

13) यह शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में जेण्डर संवेदीकरण को बढावा देने एवं विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान में वृद्धि करने में सहायक है।

14) कुछ अध्यापकों की यह धारणा होती है कि शिक्षा व्यवस्था लैंगिकता के अनुरूप होनी चाहिए। शिक्षा की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जो लड़कियों को एक उत्तम गृहिणी एवं आदर्श माता बनाने में तथा लड़कों को जीविकोपार्जन के उपयुक्त बनाने में सहायक हो। अतः कक्षागत शिक्षण के दौरान ऐसे अध्यापक विद्यार्थियों पर अवांछित टिप्पणी करते है, जो विद्यार्थियों में हीन भावना उत्पन्न कर उनके आत्म–सम्मान को ठेस पहुँचाती है। लैंगिक भूमिका एवं आत्म–सम्मान का ज्ञान उपर्युक्त वर्णित अवांछित व्यवहार को रोकने में सहायक है।

शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में बालक व बालिका के लिए समाज द्वारा मान्य उचित व्यवहार, अभिवृत्ति, क्रिया कलाप एवं गतिविधियाँ क्या होनी चाहिए? इन सबकी उपेक्षा लैंगिक भूमिका के अन्तर्गत की जाती है। वहीं दूसरी तरफ आत्म–सम्मान में आत्म–विश्वास, स्वाभिमान, व्यक्तिगत वर्धन, उपलब्धि, निर्णय लेने की क्षमता, दूसरों पर विश्वास करने की योग्यता, त्रुटियों को स्वीकार करने व उनसे सीखने की क्षमता, अपनी सीमाओं की समझ, भावात्मक दृढ़ता, दोषारोपण रहित व्यवहार, आशावादी दृष्टिकोण, दिशात्मक एवं स्वतंत्र दृष्टिकोण, सहयोगात्मक रवैया जैसी माँगे समाहित रहती है। आधुनिक समय में लिंग सम्बन्धी विभिन्न अध्ययनों द्वारा शैक्षिक परिवेश में व्याप्त लैंगिक असमानता एवं भेदभाव को कम अथवा समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। जिससे विद्यार्थियों के आत्म–सम्मान को ऊँचा उठाया जा सके एवं देश के सभी विद्यार्थी ;बालक एवं बालिकाद्ध स्वतंत्र रूप से देश के विकास में अपनी भागीदारी निभा सके। लैंगिक भूमिका पर विचार करते हुए हम पाते है कि बालक व बालिका का शरीर लैंगिक अन्तर को सीमित करता है, किन्तु यह अन्तर उसके क्रियाकलापों, गतिविधियों एवं आत्म–सम्मान को कितना और किस प्रकार प्रभावित करता है? निरन्तर शोध का विषय रहा है। वस्तुतः शैक्षिक पटल पर लैंगिक भूमिका एवं आत्म–सम्मान की अवधारणाओं का ज्ञान एवं उनके शैक्षिक निहितार्थ अध्यापक, विद्यार्थी, शैक्षिक कार्यकताओं एवं प्रशासकों के लिए महत्वपूर्ण और बहुत उपयोगी है।

सन्दर्भ

1) ब्रेंडन, एन0 (1969) द साइकोलाजी ऑफ सेल्फस्टीम, लॉस एँजिल्स, नोश पब्लिशिंग।
2) सुधा, डी0के0 (2000) जेण्डर रोल्स, न्यू दिल्ली, ए0पी0एच0 पब्लिशिंग।
3) www.shodhganga.inflibnet.ac.in
4) www.psychology.org/linka.

सुनीता भार्गव
शोध निर्देशिका , प्राचार्य ,संजय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय जयपुर (राजस्थान) .

सन्दीप अरोरा
शोधार्थी (शिक्षा) पी.एच.डी. , राजस्थान विश्वविद्यालय , जयपुर ।

LBP PUBLICATION